epaper.lokmat.com/lokmatsamachar

लोकमत समाचार
पुणे, बुधवार, 10 दिसंबर, 2014

पुस्तक समीक्षा

कैकेयी/ मेजर सरजू प्रसाद गयावाला

स्त्री-अस्मिता की पहचान- खंडकाव्य

स्त्री- विमर्श या नारीवाद, स्त्री की अपने अस्तित्व के प्रति सजगता और अपनी शोध यात्रा की दिशा है. स्त्री की सही अस्मिता का चिंतन है. अपने बचपन से लेकर मृत्यु तक की सभी यातनाओं का दर्शन है. स्त्री आंदोलन का प्रमुख लक्ष्य स्त्री को तमाम पारंपरिक मल्यों से मक्त कराना है. पुरुष ने आज तक स्त्री को निम्न स्थान दिया है, जिससे नारी का व्यक्तित्व कुंठित हो गया है. इस कुंठित व्यक्तित्व से आज की नारी मुक्त होना चाहती है और उसे होना भी चाहिए.

मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' लिखित खंडकाव्य 'कैकेयी' में ऐतिहासिक कथानक के परिप्रेक्ष्य में स्त्री-मुक्ति की पुनर्व्याख्या की है, जो आज के समाज की जीवंत समस्या है. प्रस्तुत खंडकाव्य ऐतिहासिक रामकथा पर आधारित है और कैकेयी के प्रति नूतन दृष्टिकोण को उजागर करता है. कैकेयी रामायण का उपेक्षित पात्र है. रामायण के सभी पात्र आदर्श की स्थापना करते हैं. मेजर सहाब के मन में यह प्रश्न बार-बार उठता है कि क्या माता भी कभी कुमाता हो सकती है? तो इसका ठीक-ठीक उत्तर यही है कि एक स्त्री जिसकेविभिन्न आदर्शवादी रूप है, जैसे आदर्श-पत्नी, आदर्श-गृहणी, आदर्श-माता,आदर्श-बहुआदि. इन सबमें ज्यादा आदर्शवादी रूप है माता का.

प्रस्तुत पंक्तियां कवि के भावुक मन की उपज है जो नारी की महिमा को उद्घाटित करने के लिए लालायित है. वह चाहता है कि उपेक्षित रही स्त्री की महिमा को उजागर किया जाए.' भरतमांडवीवार्ता' सर्ग में नारी विमर्श एवं उसके प्रति विशाल दृष्टि से देखने की प्रेरणा को मेजर सहाब ने बहुत रोचक ढंग से इस प्रकार वर्णित किया है-

चलेगी न सृष्टि बिना देवियों के,
बनेगी न सृष्टि बिना देवियों के. बुझेगी न सृष्टि बिना देवियों के. यह रमणी के आंचल में अमृतसादृश्य है, यह कामिनी की आंखों में निर्जर सा पानी. अदय हो न सकती सदा ही सदय है. यह औरत की छाती में मां का हृदय है. गलत आंख डालते भी वह निर्दय है. नहीं तो हमेशा-हमेशा अभय है.

स्त्री के बिना संसार की कल्पना नहीं की जा सकती. औरत एक माता है. अगर इस पर गलत नजर डाली जाए तो यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि इसका एक रूप शक्ति का भी है. उपर्युक्त उद्धरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि मेजर सहाब ने पुराण कथा के माध्यम से नारी महिमा को उद्घाटित करने का प्रयास किया है. वर्तमान समय में स्त्री अत्याचार कि जो खबरे सुनाई देती है उससे कवि तिलमिला उठता है और वह कहता है-

भक्ति, भावना और उपासना बहुत बड़ी पूजा है. मातृ सेवा से बढ़कर जग में, श्रेष्ठ नहीं कुछ दूजा है. आज समाज में अगर माता को पहचानने का जज्बा आ जाएं तो स्त्री के प्रति देखने का समाज का दृष्टिकोण बदल सकता है. मेजरसहाब ने खंडकाव्य की शुरुआत में ही मां शारदा की वंदना करते समय लिखा है. मां शारदे, तुम शक्ति दो, संहार करने के लिए. मन की व्यथा को शांत कर, उपकार करने के लिए. उपेक्षित अबला को भला मैं, कैसे उबार कर पाऊंगा. मां शारदे, तुम शक्ति दो, वरना यहीं मर जाऊंगा.

प्रकाशक- क्षितिज प्रकाशन, पुणे

नारी नर और नारायण नारी संपूर्ण परायण नारी नर से उत्तम है नर कामी, नारी सक्षम है. 'कैकेयी' की काव्य यात्रा इतिहास एवं पौरानिक कथानक से शुरू होती है और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में घटित होती है. इसमें वीर रस, स्त्री-दशा, राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति, समाज जीवन का यथार्थ चित्रण, प्रगतिशील चेतना, राजनीतिक चेतना और समकालीन बोध का समग्र चित्रण है. निश्चित तौर पर इनकी यह कृति समाजहीत साधना में सक्षम है.

■ शिराज शेख, शोध-छात्र,
हिंदी विभाग,
पुणे विश्वविश्वविद्यालय, पुणे.